ऐका ऐका प्रेमळ भक्त शिरोमणि। महाधिकारी बंधू भगिनी। हा उपदेश ठसवूं मनीं। नित्य मुक्त, मरणभय टाकुनी। संसार खेळ खेळूंया ब्रह्मानंदे। उड्या घेऊं या ब्रह्मानंदें।।१।। आत्मा गाऊं आत्माचि पाहं। आत्मरूपें देवता ध्याऊं। नामरूपाकृति गाळुनि। सुखी राह्ं चैतन्य भुवनीं।।२।। सकलमती अखंड सुखी। शपथ घेतली याची लाज राखी। तूं शिवदत्त चैतन्य देवा। प्रत्यक्ष प्रगटोनि मस्तकीं वरदहस्त ठेवा।।३।। आत्मतेज महिमा विसरोनी। कैलास वैकुंठ सुख मानोनीं, ध्यातो मनीं।।४।। श्रीमाणिक जय माणिक। हंस सोऽहं सोऽहं हंस:।। सोऽहं हंसाचें उडणे। सोऽहं सोऽहं ॐ मुक्तिपद देणें।।१।।